विवाह परमेश्वर के नमूने के अनुसार है

जब कोई पुरुष और स्त्री विवाह करता या करती है तो उन्हें शुभकामनाएं देनी चाहिए। विवाह एक ऐसी अवस्था है, जिसमें परमेश्वर चाहता है कि मनुष्यजाति बनी रहे और यह एक ऐसी अवस्था है, जिसमें लोग मनुष्यजाति की बड़ी आशिषें पा सकते हैं।

आज लोग कई रीतियों से विवाह को सम्मान देने में असमर्थ हैं। कुछ लोग तो इसका मज़ाक उड़ाते हैं। कई धर्मों में सिखाते हैं कि अविवाहित रहना आत्मिक रूप में विवाहित जीवन से बेहतर है, इसलिए यदि कोई जीवन भर धार्मिक कार्य करना चाहता है तो उसे विवाह किए बिना अकेला रहना आवश्यक है। शायद आज लोगों के लिए यह बात हानिकारक है कि मीडिया विवाह की अवस्था को गलत ढंग से पेश कर रहा है। उदाहरण के तौर पर कुछ विशेष कार्यक्रम टेलीविज़न पर केवल विवाहित लोगों के बारे में ही हैं। उन कुछेक लोगों में से कितने लोग खुशहाल विवाहित जीवन व्यतीत कर रहे हैं? विवाह के प्रति गलत धारणा उन अविवाहित दम्पत्तियों से भी स्पष्ट होती है, जो विवाह किए बिना एक साथ रहते हैं।

विवाह की इस गलत धारणा के विपरीत, पवित्र शास्त्र हमें बताता है कि विवाह परमेश्वर के नमूने के अनुसार है। व्यक्तिगत अनुभव विवाह की आशिषों पर मुहर लगाता है।

विवाह परमेश्वर की ओर से है

विवाह को परमेश्वर ने बनाया। पहला विवाह परमेश्वर ने सम्पन्न करवाया। उत्पत्ति 1 के अनुसार परमेश्वर ने सब कुछ ''अच्छा'' बनाया (उत्पत्ति 1:4, 10 , 12, 18, 21, 25)। जब उसने पुरुष को बनाया तो उसने देखा कि जो सब कुछ उसने बनाया है ''बहुत अच्छा'' था (उत्पत्ति 1:31)। फिर उत्पत्ति 2 में पहली बार किसी चीज़ को ''अच्छा नहीं'' कहा गया: परमेश्वर ने देखा कि यह ''अच्छा नहीं'' कि पुरुष अकेला रहे (उत्पत्ति 2:18)। फिर परमेश्वर ने पुरुष की पसली निकाली और उससे स्त्री बना दी। स्त्री की रचना और परमेश्वर द्वारा उसे आदम को सौंपे जाने पर पहला विवाह सम्पन्न हुआ। जब यीशु को विवाह के बारे में पूछा गया तो उसने पीछे उसी घटना को देखते हुए आने वाली सब पीढ़ियों के लिए विवाह का मानक ठहरा दिया (मत्ती 19:3-9)। परमेश्वर ने विवाह को मान्यता दी, क्योंकि उसने स्वयं यह समझा कि पुरुष के लिए अकेला रहना अच्छा नहीं। इसलिए उसने विवाह की रीति बनाई। बाइबल विवाह को मान्यता देती है।

पूरी बाइबल में विवाह की बात है। पुराने नियम में विवाह और प्रेम पर कई कहानियां हैं, उदाहरण के तौर पर याकूब और राहेल, रूत और बोअज़ की कहानी। एक पुस्तक, श्रेष्ठगीत का मुख्य विषय रोमांस का प्रेम ही है।

नये नियम में यीशु ने विवाह के एक समारोह में भाग लेकर विवाह को मान्यता दी (यूहन्ना 2:1-11)। विवाह की सुन्दरता यीशु का कलीसिया से सम्बन्ध पति-पत्नी के रूप में दिखाए

जाने में भी दिखती है (इफिसियों 5:22-33)। स्वर्ग को ''उस दुल्हन के समान'' दिखाया गया है, ''जो अपने पति के लिए श्रृंगार किए हो'' (प्रकाशितवाक्य 21:2)। मसीही लोगों के लिए परिस्थितियां कठिन होने के बावजूद पौलुस ने मसीही पुरुषों और स्त्रियों को विवाह करने की सलाह देकर विवाह को स्वीकृति दी (1 कुरिन्थियों 7:26-28)। इब्रानियों के लेखक ने विशेष रूप में विवाह के लिए कहा, ''विवाह सब में आदर के योग्य है, और बिस्तर बेदाग रहे; परन्तु परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा'' (इब्रानियों 13:4; NKJV)।[1] नया नियम स्पष्ट बताता है कि बड़ा धर्मत्याग करने वालों की एक विशेषता यही है कि वे विवाह करने से रोकेंगे (1 तीमुथियुस 4:3)।

इसलिए जब कोई दम्पत्ति विवाह के बन्धन में बन्धता है तो वे जीवन की उस अवस्था में पहुंच जाते हैं, जो परमेश्वर को स्वीकृत है। बाइबल यह तो संकेत देती है कि अधिकतर लोग विवाह करेंगे पर यह नहीं बताती कि अविवाहित रहना बुरा है। यीशु ने विवाह नहीं किया। पौलुस का भी विवाह नहीं हुआ था। पौलुस तर्क देता है कि कुछ परिस्थितियों में तो अच्छा है कि मसीही लोग विवाह से बचें, यानी यदि वे बिना पाप किए ऐसा कर सकें (1 कुरिन्थियों 7:38)। अकेले (अविवाहित) लोगों को भी परमेश्वर के राज्य में अपना स्थान मिलेगा।

मानवीय अनुभव विवाह की आशिषों की पुष्टि करता है

विवाह अच्छी बात है यानी यह एक आशीषित, स्वाभाविक अवस्था है, जिसमें मनुष्य ने रहने की ठानी। यह इस तथ्य से स्पष्ट है कि हर समाज के लोग किसी न किसी ढंग से पुरुष और स्त्री का विवाह करते हैं।[2]

विवाह, शादी करने वालों के लिए आशीष है। सामाजिक वैज्ञानिकों ने यह साबित करने के लिए प्रमाणों के अम्बार लगा दिए हैं कि विवाह करने वालों को विवाह से आशिषें मिलती हैं। उदाहरण के लिए शोधकर्त्ता निम्न दावे करते हैं।

(1) ''विवाहित लोग अविवाहितों की अपेक्षा अधिक प्रसन्न रहते हैं।''[3]

(2) ''विवाहित लोग शारीरिक और मानसिक रूप में स्वस्थ होते हैं और अविवाहितों की अपेक्षा उनकी उम्र लम्बी होती है।''[4]

(3) ''विवाहित लोग लम्बी बीमारियों से कम पीड़ित होते हैं'' और ऑपरेशन के बाद अस्पताल में उनकी मृत्यु कम ही होती है।[5] ''विवाहितों के मुकाबले अविवाहित पुरुषों की मृत्यु दर 250% अधिक है और अविवाहित स्त्रियों की मृत्यु दर 50% अधिक है।''[6]

(4) विवाह पुरुष को अधिक सफल बनाता है और परिवारों को अधिक समृद्ध।[7] ''विवाहित दम्पत्तियों के पास अकेले वयस्कों की अपेक्षा अधिक सम्पत्ति होती है, और जितना अधिक समय तक वे विवाहित रहते हैं उतनी ही अधिक सम्पत्ति इकट्ठा करते हैं।''[8]

(5) ''विवाहित लोग, अविवाहितों की अपेक्षा शारीरिक सम्बन्धों की सन्तुष्टि का अधिक आनन्द लेते हैं।''[9]

(6) ''संसार के कुछ भागों में विवाहित लोगों को कानूनी अधिकार भी होते हैं।''[10]

आमतौर पर विवाहित लोगों का जीवन बेहतर क्यों होता है? इसके कई कारण हो सकते हैं। विवाहित लोग शारीरिक रूप में भी स्वस्थ होते हैं, क्योंकि वे एक-दूसरे का ध्यान रखते हैं।

वे मनोवैज्ञानिक तौर पर और भावनात्मक तौर बिल्कुल स्वस्थ होते हैं क्योंकि वे जानते हैं कि वे एक-दूसरे से प्रेम करते हैं। इसलिए वे अपनी समस्याओं को एक-दूसरे के साथ बांटते हैं। उनके पास पैसा भी अधिक होता है, क्योंकि वे दोनों इकट्ठे रहते हैं जो सस्ता भी पड़ता है। *सामाजिक* तौर पर भी उन्हें लाभ होता है क्योंकि विवाहित लोगों का पति या पत्नी के रूप में एक मित्र तो होता है, इसके अलावा दम्पत्तियों के लिए मित्र बनाना अधिक आसान होता है, विवाहित दम्पत्ति समाज में सहज ढंगों से दूसरों से जुड़ जाते हैं जबकि अविवाहित लोगों को ऐसे समाज में असुविधा होती है, जहां अधिकतर लोग विवाहित ही हों। अन्ततः यदि वे मसीही हैं तो वे *आत्मिक रूप में* भी मज़बूत होंगे क्योंकि मसीही पति-पत्नी एक-दूसरे को परमेश्वर के लिए जीने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

अन्त में ये सब कारण उसी तथ्य को स्पष्ट करते हैं, जो आरम्भ में परमेश्वर ने घोषित किया: यह ''अच्छा नहीं'' कि आदमी अकेला रहे।

विवाह से समाज भी आशीषित होता है। विवाह केवल विवाहित दम्पत्ति को ही आशीषित नहीं करता, बल्कि समाज को भी लाभ पहुंचाता है। ब्रिजट महर ने लिखा है:

> विवाह घर को रहने के लिए सुरक्षित स्थान बनाता है, क्योंकि यह घरेलू हिंसा और बाल-शोषण जैसी सामाजिक कुरीतियों को भी दूर करता है।
>
> वह समाज जहां विवाहित लोग रहते हैं, रहने के लिए अधिक सुरक्षित और आकर्षित स्थान है, क्योंकि यहां रहने वाले युवाओं में आपराधिक प्रवृत्तियां कम पाई जाती हैं।
>
> निर्धनता और भलाई की निर्भरता के लिए विवाह सबसे अच्छी दवाई है।
>
> विवाहित लोग स्वस्थ, अधिक मेहनती, अच्छे नागरिक, व्यापार को लाभ पहुंचाने वाले और देश की अर्थव्यवस्था को मज़बूत करते हैं।[11]

इसके अलावा अविवाहित माता-पिता के बच्चे (अकेले माता-पिता के बच्चे की तुलनाएं) कम शोषण का शिकार होते हैं, ''जोखिम भरे व्यवहार में संलिप्त नहीं होते, जैसे विवाह से पहले सैक्स, दुष्कर्म या आत्महत्या।''[12] वे स्कूल में भी अच्छे होते हैं और आर्थिक रूप में भी उनके हालात अच्छे होते हैं।[13] अतः जब आपका विवाह होगा, आप ऐसा जीवन चुनेंगे जो आपको व्यक्तिगत लाभ ही नहीं देगा बल्कि समाज के लिए भी लाभदायक होगा। तुम शुभकामनाओं के हकदार हो!

विवाह की आशिषें सशर्त होती हैं

यह सच है कि विवाह लोगों को और समाज को आशीषित करता है, लेकिन विवाह हर विवाहित दम्पति के लिए आशीष नहीं होता।[14] कुछ विवाह तो एक या फिर दोनों के लिए संताप का कारण बन जाते हैं। ये विवाह समाज के लिए आशीष बनने के बजाय अपराधियों को बढ़ाते हैं और निर्धनता और कंगाली का कारण बनते हैं। दो व्यक्तियों का विवाह होने का अर्थ आवश्यक नहीं है कि वे विवाहित ही रहेंगे। अमेरिका में आधे से अधिक विवाह तलाक के साथ खत्म हो जाते हैं।[15] इसके अलावा बहुत से विवाह तलाक से टूटते नहीं हैं, पर वे दुखी ही रहते हैं। जैसा कि परिकथाओं में दिखाया जाता है, सभी विवाहित लोग, ''खुशी-खुशी रहें'' ऐसा नहीं है।

वे लोग, जो अभी विवाह करने की सोच रहे हैं इस बात को ध्यान में रखें कि विवाह की आशिषें ऊपर से नहीं टपकतीं। बेशक वे सशर्त होती हैं। उदाहरणतया परमेश्वर ने हमें इस भरे-पूरे संसार में ढेरों आशिषें दी हैं, लेकिन इस संसार में जीने के लिए खाना और खाने को पाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। परमेश्वर ने हमें जो उद्धार की आशीष दी है उसमें हमारे विश्वास और आज्ञापालन की शर्त है। इसी प्रकार परमेश्वर ने मनुष्यजाति को विवाह का संस्थान देकर आशीषित किया है, लेकिन विवाह की आशिषों का आनन्द उठाने के लिए लोगों को कुछ शर्तें माननी आवश्यक हैं।

वे शर्तें क्या हैं? अगले पाठ हमारे इन सवालों का जवाब देने में हमारी मदद करेंगे। तथापि शुरू से ही इस सच्चाई को मान कर लें कि सफल विवाह के लिए-दम्पत्ति के लिए आवश्यक है कि वे विवाहित रहें, खुशी-खुशी रहने के लिए पति-पत्नी दोनों को इसके लक्ष्य को पाने के लिए मिलकर प्रयास करना होगा। बिना मेहनत किए कभी कुछ नहीं होता। न ही आपका विवाहित जीवन अपने आप वैसा हो जाएगा, जैसा आप चाहते हैं। याद रखें कि आपका विवाह तभी सफल होगा, जब आप प्रयास करेंगे।

टिप्पणियां

[1]इब्रानियों 13:4 के पहले भाग का वैकल्पिक अनुवाद है ''विवाह का बिस्तर दूषित न हो'' (NRSV)। यह शब्दावली एक कथन के बजाय आज्ञा है। दोनों ही अनुवाद हो सकते हैं। [2]संसार भर में और पूरे इतिहास में अधिकतर समाजों में विवाह के किसी न किसी रूप को माना गया है। स्पष्टतया सभी समाज विवाह को वैसा नहीं देखते जैसा आरम्भ में परमेश्वर ने इसे बनाया था। उदाहरण के लिए कुछ समाजों मे बहुविवाह की प्रथा पाई जाती है; परन्तु किसी समाज में समलैंगिक विवाह को एक समान रूप में नहीं माना गया है। [3]हेनरी बेन्सन, ''द पब्लिक बेनेफिट्स ऑफ़ मैरिज: नॉट जस्ट ए 'सिलेक्शन' इफैक्ट'' (http://www.2-in-2-1.com/university/publicbenefit/index2.html; इन्टरनैट; 23 अक्तूबर 2008 को देखा गया)। इस लेख के अन्त में और अच्छे हवाले दिए गए हैं। [4]ब्रिजट इ. महेर, ''द बेनेफिट्स आफ़ मैरिज,'' फैमिली रिसर्च कौंसिल (http://www.frc.org/get.cfm?i=IFO3Jo2&v; इन्टरनैट; 18 जुलाई 2005 को देखा गया)। विवाह के लाभों पर और जानकारी यूमासु जे. सिएव, ''द ब्यूटी एण्ड बेनेफिट्स आफ़ मैरिज,'' *हैल्थ,* ओक्लाहोमा कोऑपरेटिव एक्स्टेंशन सर्विस (http://74.125.95.104/search?q=cache:vW8nun6P8IkJ:fcs.okstate.edu/health/articles/articlef/The_beauty_and_benefits_of_Marriage.htm+Youmasu+J.+Siewe,+"The+beauty+and+benefits+of+Marriage,"+Health,+Oklahoma+Cooperative+Extension+Service&hl=en&ct=clnk&cd=1&gl=us; इन्टरनैट; 24 अक्तूबर 2008 को देखा गया) और टॉड ई. लिनामन, ''मैरिज डज़ हेव इट्स बेनेफिट्स!'' फैमिली लाइफ़ फैक्ट्स (http://www.myflr.org/Article.asp?ID=32; इन्टरनैट; 24 अक्तूबर 2008 को देखा गया)। [5]बेन्सन। [6]वही। [7]वही। [8]महेर। [9]वही। [10]''उदाहरण के लिए, अमेरिका में 1,400 कानूनी अधिकारों के आदेश पर विवाहित दम्पत्तियों को दिए गए हैं'' (''लीगल एण्ड इकॉनोमिक बेनेफिट्स मैरिज'' [http:www.religioustolerance.org/mar_bene.htm.; इन्टरनैट; 29 अक्तूबर 2008 को देखा गया])। इस लेखक में इक्कीस राज्य और संघीय लाभ बताए गए हैं।

[11]महेर। [12]वही। [13]वही। [14]अनुसंधान के अन्य क्षेत्रों की तरह विवाह के मामले में ये आंकड़े कि समाज शास्त्रियों द्वारा इकट्ठे किए गए आंकड़ों से ऐसे देश या क्षेत्र में सामान्य परिस्थिति की बात पता चलती है, परन्तु किसी विशेष विवाह की बात नहीं करती। उदाहरण के लिए एक विशेष अध्ययन में साक्षात्कार किए जाने वाले 60 प्रतिशत दम्पत्तियों ने कहा कि वे इस कारण प्रसन्न हैं क्योंकि वे विवाहित हैं, अनुसंधानकर्त्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि विवाहित लोग अपेक्षाकृत्त अधिक प्रसन्न होते हैं। परन्तु यह इस बात को साबित नहीं करेगा कि कोई विशेष

विवाह प्रसन्न हो। इस उदाहरण में 10 में से 4 दम्पत्तियों ने कहा होगा कि यदि वे विवाहित *न* होते तो अधिक प्रसन्न होते।[15]अमेरिका में तलाक की दर 50 प्रतिशत के लगभग बताई जाती है परन्तु *द न्यू यॉर्क टाइम्स* के एक लेख में कहा गया कि वास्तविक तलाक दर कभी भी 41 प्रतिशत (2001 में) से अधिक नहीं है और हाल ही में यह दर कम होने लगी है। (डैन हर्ली, ''डाइवोर्स रेट: इट्स नॉट ऐज़ हाई ऐज़ यू थिंक,'' *द न्यू यॉर्क टाइम्स* [19 अप्रैल 2005]: F7.)

लम्बा और खुशहाल वैवाहिक जीवन

मेरी पत्नी ऐवलिन और मेरे विवाह को अठावन वर्ष हो गए हैं। आशा करता हूं कि हमारा उदाहरण आपको उत्साहित करेगा।

यीशु के आज्ञाकारी उपासक होने के कारण जब हम मिले, तो हमें एक-दूसरे से प्रेम हो गया। हमने माना कि जितना हम मसीह में परिपक्व होते जाएंगे, हमारा प्रेम और गहरा होता जाएगा। हमने सीखा कि अगर हम परमेश्वर को अपना ''पहला प्रेम'' (प्रकाशितवाक्य 2:4) बनाएंगे तो हमारा एक-दूसरे के लिए प्रेम और पक्का होगा। हमारा नैतिक स्तर और जीवन का बुनियादी लक्ष्य एक ही था। विवाह में एक सही साथी पाने से अधिक आवश्यक; सही साथी बनना है।

हमने अपनी कठिनाइयों के हल के लिए कभी भी तलाक का सहारा लेना नहीं चुना। हमने अपने स्वार्थीपन को खत्म किया, यह मानते हुए कि ''प्रेम अपनी भलाई नहीं चाहता'' (1 कुरिन्थियों 13:5), और अपना जीवन पौलुस के फिलिप्पियों 2:3, 4 में दिए गए कथन के अनुसार जीना आरम्भ किया।

> विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो पर दीनता से एक-दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन दूसरों के हित की भी चिन्ता करे।

हम दोनों ने हमेशा अपनी आवश्यकता से पहले दूसरे की आवश्यकता को रखा। स्वार्थ और घमण्ड वैवाहिक जीवन में सबसे बड़ा रोड़ा है। हमारी अच्छी टीम है। हम अभी भी अच्छे दोस्त हैं। हम एक-दूसरे का साथ बहुत पसन्द करते हैं और हर दिन इकट्ठे बैठकर खूब हंसते हैं। हम एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। आज भी कई मुद्दों पर एकमत नहीं होते पर हम बुद्धि के लिए प्रार्थना करते हैं (याकूब 1:5) और आराम से उस मसले का हल ढूंढ़ निकालते हैं।

हम आपको उत्साहित करेंगे कि इस पुस्तक में दी गई सच्चाइयों पर आप विश्वास करें और उन पर चलें।

बर्ल कर्टिस

सफल विवाह में पाए जाने वाले नियम

कुछ लोग हैरान होते हैं कि मेरे और मेरी पत्नी के विवाह को कितना लम्बा सत्तासठ वर्षों का समय बीत चुका है, लेकिन हमें यह हैरानी भरा नहीं लगता। हम दोनों को एक-दूसरे से तब प्रेम हुआ जब क्रिश्चियन कॉलेज में जूनियर थे। इससे हम दोनों को एक-दूसरे को अच्छी तरह जानने का अवसर मिला और हम दोनों ने मसीही सिद्धांत, जिन पर हम कायम थे, एक-दूसरे की

उनके लिए सराहना की। एक-दूसरे से मिलने के पूरे दो साल बाद हमने विवाह कर लिया लेकिन एक-दूसरे के प्रति जो हमारी भावनाएं हैं उनमें कोई फर्क नहीं आया। इसके विपरीत हमारे दिलों में एक-दूसरे के लिए प्रेम समय बीतने के साथ-साथ और गर्माहट भरा और गहरा होता चला गया। हम दोनों के दिलों में एक-दूसरे के परिवारों के प्रति प्रेम और सम्मान और बढ़ता गया।

इससे हमें लाभ हुआ कि कभी भी अगर कोई कठिनाई आई तो हमने हमेशा परमेश्वर से उनके हल के लिए मदद मांगी। मैक्सिन ने मुझे परिवार का मुखिया बनने दिया और मैंने बच्चों को पालने की ज़िम्मेदारी उस पर छोड़ दी और मुझे खुशी हुई जब उसने मां की ज़िम्मेदारी सम्भाल ली। यह हमारे लिए आशीष की बात है कि आज हमारे चारों बच्चे हमसे बहुत प्रेम करते हैं और हमारा सम्मान करते हैं, और हमें विश्वास है कि हमारे ग्यारह नाती-पोते भी ऐसा ही करेंगे।

शायद अगर परमेश्वर न चाहता तो हम इकट्ठे सत्तासठ वर्ष न बिताते, यह परमेश्वर की आशीष है कि उसने हमें इकट्ठा रहने का अवसर दिया और जब तक जिंदा रहेंगे तब तक देगा भी। अपने लम्बे खुशहाल और सफल वैवाहिक जीवन के लिए हम सारा श्रेय उस परमेश्वर को देते हैं।

एस. एफ़. टिम्मरमैन